Explanation of some special pictures of manuscripts stored in Rampur Raza Library (रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में संग्रहित पाण्डुलिपियों के कुछ विशिष्ट चित्रों की व्याख्या)

Dr. Anseeta Gupta
Pritee College, Bisalpur Road, Bareilly. U.P., India

DOI: 10.52984/ijomrc3305

सार:

रामपुर रजा लाइब्रेरी में संग्रहित पाण्डुलिपियों के कुछ विशिष्ट चित्रों को अवलोकन कर उसे प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्रमुख मात्राओं में संग्रहित एवं देश विदेश की पांडुलिपि रामपुर रजा लाइब्रेरी में गौरव दर्शाती हैंए लाइब्रेरी में संग्रहित एल्बम में मंगोल तैमूरी एवं मुगल शासकों राजकुमारों व उच्च स्तर के लोगों के लघु चित्र मौजूद हैं। जिसमे सुंदर चित्रों एवं प्राकृतिक दृश्य देवी-देवताओं संगीतज्ञ पुरुष महिला विभिन्न वस्तुएं समय परिस्थितियों के माध्यम से दर्शाए गए हैं।

रामपुर रजा लाइब्रेरी में संग्रहित पाण्डुलिपियों के कुछ विशिष्ट चित्रों को अवलोकन कर उसे प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन पाण्डुलिपि चित्रों से विशेषता उस समय की कला और संस्कृति का विशुद्ध परिचय मिलता है तथा उनके संगेह किये हुए ग्रन्थों से हमें धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्वरूप से अवगत हुए, जो चित्र निम्न हैं।

रसीद–उद्दीन–फजुल्लाह द्वारा रचित जमी–उद्–त्वारिख के एक चित्र में जिसमें एक बरगद के वृक्ष के नीचे कुछ आकृतियों का चित्रण हुआ है। उनकी वेशभूषा तथा हाव–भाव से लगता है कि वे लोग कोई विद्वान है और किसी विषय पर चर्चा कर रहे हैं। चित्रित आकृतियों के सिर पर एक विशेष प्रकार की टोपी है, जिनमें आगे की ओर पंख लगे हैं। कुछ आकृतियों में यहाँ अलग तरह के भी है। इन लोगों ने चोगा पहन रखा है तथा ऊपर से शॉल भी ओड़ रखा है। वस्त्रों के अंकन में लाल–पीले–हरे रंगों का प्रयोग प्रमुखता से हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति के पास एक पुस्तक है। कुछ व्यक्ति पुस्तक को पढ़कर सुना रहे हैं। कुछ राजसी स्त्रिया झरोखे से झाँककर देख रही हैं। उनमें से एक स्त्री ने कवा पहन रखा है तथा दूसरी स्त्री ने पेशवाज पहन रखे हैं। दोनों ही स्त्रियों ने पंखों वाली टोपी पहन रखी है। चित्र मे जो बरगद का वृक्ष दिखाया गया है। उस पर कुछ विशेष प्रकार की टेक्निक का प्रयोग किया ऐसा प्रतीत होता है। उसके एक–एक पत्ते को चित्रकार ने बारीकी से चित्रित किया है, उसे देखकर ऐसा लगता है कि

उस समय का चित्रकार प्रकृति चित्रण करने में पर्याप्त रूचि लेता था। चित्र में खुले आसमान का चित्रण भी सुन्दर ढंग से हुआ है।

फिरदौस द्वारा रचित शाहनामें के पाण्डुलिपि चित्र में रूस्तक द्वारा इस्फान्दर को मारने का दृश्य है। दोनों ही घोड़े पर बैठे भागते हुए चित्रित हैं। रूस्तम ने रूस्तम ने भागते अवस्था में ही तीर चला दिया जो इस्फान्दर की आँखां को भेदकर चला जाता है।

इस चित्र में इन घोड़ों का ही सजीवता से अंकन हुआ। भागते अवस्था में इनके पैरों की स्थिति तथा इनके शरीर की भंगिमा वह की स्थिति का मानो सशक्त प्रमाण है। एक घोड़े को भूरे रंग में तथा दूसरे को काले रंग में दिखाया गया है। भूरे रंग के घोड़े के शरीर में सफेद रंग से चकत्ते बनाये गये हैं। रूस्तम को आक्रामक वेशभूषा पहने चित्रित किया गया है, उसके एक हाथ में धनुष है तथा उसके कमर में तसकर बँधे हैं, जिसमें बहुत से तीर रखे हैं। इस्फान्दर जो तीर लगने से आहत है। एक हाथ से तीर को बाहर निकालने का प्रयत्न कर रहा है। इस चित्र में एक बाज का अंकन भी हुआ है। वह कुछ आवाजे करते हुए चित्रित है। उसके पूँछ कुछ अप्रत्यक्ष रूप से लम्बी बनाई गई है। चित्र मं वह सम्भवतः साहस का परिचय है। चित्र की पृष्ठभूमि उसके विषय के अनुकूल बने हैं। आकाश को गहरा नीला तथा धरातल को कुछ हल्के रंग से बनाया गया है। कहीं–कहीं पर फूल वाले पौधे तथा सूखे पौधे चित्रित हैं।

अकबर के व्यक्तिगत संग्रह दीनाव–ए–हाफिज का एक पाण्डुलिपि चित्र जिसका चित्रकार नरसिंह है। इन चित्र से मुगल कालीन ऐश्वर्य एवं विलासिता प्रधान दैनिक कार्यकलाप, उत्सवों आदि का पता चलता है, इस चित्र में मुगल राजकुमार अपने कुछ साथियों के साथ महल के छत में उत्सव मनाते हुए चित्रित किय गये हैं, एक साथी राजकुमार को शराब का प्याला दे रहा है। एक साथी पीछे मुड़ कर देख रहा है। एक मंजीरा बजा रहा है। एक शान्त भाव से बैठा है। कुछ सेवकगण भोजन इत्यादि का प्रबन्ध करते हुए चित्रित है।

इस चित्र में बहुत सी व्यक्ति आकृतियाँ हैं, फिर भी प्रत्येक चेहरे का अपना अलग भाव है, जो व्यक्ति मंजीरा बजा रहा है, उसके चेहरे का भाव तथा शरीर की स्थिति को देखकर ऐसा प्रतीत होता है। जैसे वहाँ बाजा बजाते हुए एक परलौकिक आनन्द का अनुभव कर रहा है। एक व्यक्ति बांसुरी बजा रहा है, बांसुरी बजाते हुए, उल्लास से वहाँ

अपने स्थान से कुछ उठा हुआ है, इस चित्र में केले के वृक्ष, पुष्प वृक्ष का अंकन है, जो कुछ अलंकारिक ढंग से चित्रित है।

गुलाम रज़ा द्वारा चित्रित एक चित्र में एक प्रधान स्त्री हुक्का पी रही है, वहाँ अन्य पाँच स्त्रियाँ भी हैं, उन्होंने बेशकीमती पोशाके पहन रखी हैं, वे सब लोग महल के खुले छत पर बैठे हैं, जो प्रधान स्त्री है, वहाँ हुक्का पीते हुए पीछे मुड़ कर कुछ कह रही है, उसके पास बैठी एक स्त्री पंखा से हवा कर रही है। उसने साड़ी पहन रखी है, अन्य चार स्त्रियों में से तीन ने घाघरा चोली तथा एक ने सलवार पहनी है। अलंकरण सभी के वस्त्रों में प्रचुरता से हुआ है दोस्त्रियाँ खड़ी हैं। उनमें से एक स्त्री आसमान की तरफ देख कर कुछ इशारे कर रही है। पास में एक अन्य स्त्री उसे पकड़ी हुई है, नीचे फर्श पर बहुत से पात्र इधर–उधर रखे हैं। महल के समीप से गोमती नदी बह रही है। गोमती नदी के उस पार लखनऊ शहर के इमारतों का भी चित्रण किया गया है। उसे देखकर उस समय के शासन व्यवस्था एवं स्थापत्य को समझा जा सकता है। इस चित्र में गरजते बादल को भी दिखाया गया है। बादलों का अंकन काले रंग से की गयी है। जिसमें सर्पिता कर रेखाओं द्वारा गरजते बिजली का चित्रण है, जो कुछ भी इस चित्र में दिखाया गया है। वह सब उसी समय प्रचलित दैनिक जीवन के अंग थे। इस चित्र से इस बात की पुष्टि होती है कि केवल शासक या राजकुमार ही नहीं बल्कि स्त्रियाँ भी उत्सवों, समारोह आदि का आयोजन करती है। उन्हें इन सबके लिए पर्याप्त स्वतन्त्रता थी, मुग़लकाल में अकबर के समय से ही स्त्रियों के ये सब अधिकार प्राप्त हो गये थे। मुगल काल के कई आखेट चित्रों में भी स्त्रियों को पुरूषों के साथ आखेट करते हुए दिखाया गया है।

अबुल हसन द्वारा चित्रित एक व्यक्ति चित्र जिसमें नूरजहाँ का चित्रण है, इस चित्र में नूरजहाँ को एक बन्दूक के साथ दिखाया गया है, नूरजहाँ गोवर्धन द्वारा चित्रित एक पाण्डुलिपि चित्र जिसमें सम्राट जहाँगीर के दरबार में होली खेलने का अंकन हुआ है।

अकबर के एलबम तिलिस्म के चित्रों में प्रथम चित्र में एक व्यक्ति को एक बड़ी सी मछली के ऊपर बैठा हुआ दिखाया गया है, व्यक्ति ने लाल रंग का कुर्ता पहना है, माथे पर पगड़ी है, जिस पर पंख लगा है। मछली को जल से बाहर दिखाया गया है। दुसरे चित्र में एक व्यक्ति हाथ में तलवार लिये चलता हुआ चित्रित है। तीसरे चित्र में ऐ कौआ चट्टान के ऊपर बैठा है, उसके कुछ दूरी पर एक महल का दृश्य है, पेड़–पौधे अलंकारिक रूप से बनाये गये हैं। पेड़ों पर पक्षी भी दिखाये गये हैं चौथे चित्र में दो मछलियाँ हैं वे शायद कूद रही हैं। इस चित्र में चट्टानें के कुछ विशेष तरह से दिखाया गया है, आकाश का अंकन हल्के आसमानी रंग से किया गया है। जहाँ चाँद भी दिखाया गया है, पाँचवे चित्र में चार स्त्रियाँ नदी में नहा रही हैं, वे चारों ही अर्द्धनग्न अवस्था में हैं, दो स्त्रियाँ तैरने का अभ्यास कर रही हैं, उनके वस्त्र एक पेड़ पर टंगे हैं, एक स्त्री उसे उतारने का प्रयत्न कर रही है। चित्र में लहरों के अंकन के लिए खेत रंग से चित्रकारी की गयी है। अन्तिम चित्र में एक युवती सितार

बजा रही है, उसके ऊपर एक तम्बू लगा हुआ है, तम्बू पर चित्रकारी बहुत सुन्दर बनी है, शायद वह अभ्यास कर रही है, पीछे बने इमारत को देखकर लगता है कि वह किसी साधारण परिवार की युवती है। उसके सम्मुख कुछ मिट्टी के बर्तन रखे हैं चित्र में पीले रंग के आकाश का चित्रण हुआ है।

अकबर के एलबम तिलिस्म में कन्या राशि के विषय पर बने एक चित्र जिसमें एक विशेष प्रकार के नाव पर एक ऊँचे मंचान पर एक युवती बैठी हुई है। नाव पर से मंचान पर चढ़ने के लिए सीढ़ी लगी हुई है, नाविक नाव चलाते हुए पीछे मुड़कर उस युवती की तरफ देख रहा है। नाव के पीछे की तरफ एक विशेष तरह की आकृति बनी हुई है। जिस पर एक लम्बा सा लहराता लाल झंण्डा लगा है। नीचे जल में उछलती कूदती मछलियों का चित्र है।

अकबर के व्यक्तिगत संग्रह दीवाने–ए–हॉफिज के एक पाण्डुलिपि चित्र में एक युवक को जो पर्वत के बीच में है। उसने अपने निचले हिस्से के शरीर को पत्तियों के

द्वारा ढककर रखा है, उसके शरीर की ऊपरी हिस्सा नग्न है। इस चित्र में काफी ऊँचे–ऊँचे पर्वत दशाये गये हैं, एक दो पेड़ भी बने हैं, उनको देखकर लगता है कि उसे बनाने में चित्रकार ने विशेष ध्यान नहीं दिया है। केवल मुख्य विषय युवक पर ही विशेष ध्यान दिया है। दो खरगोश भी बने हैं। जो पर्वत के पास छिपे हुए हैं। पास में बहते जल में दो पक्षी भी चित्रित हैं।

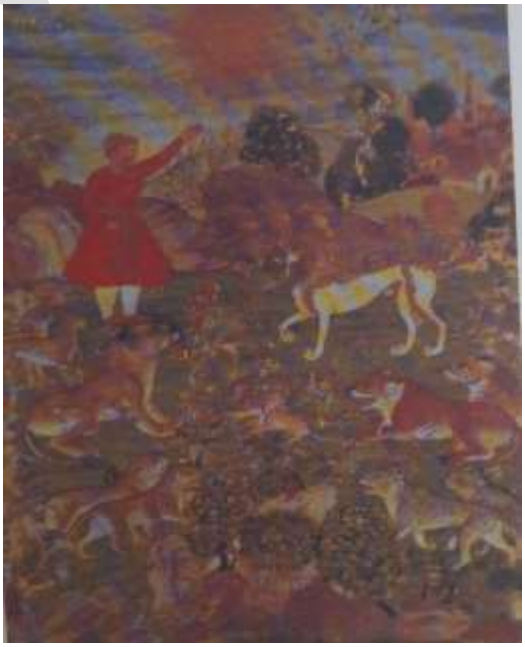

अकबर के एलबम तिलस्मि में अकबर के जन्म राशि सिंह का चित्र है। जिसमें अकबर को शेरों, चीतों, सिंहों के मध्य खड़ा दिखाया

गया है। अकबर अपने एक हाथ को ऊपर उठाये हुए हैं। ऊपर आकाश को नीले रंग से बनाया गया है। उसके बीच में चमकता सूरज चित्रित है। जिसमें यहाँ दिखाने की चेष्टा की गयी है, कि अकबर इस संसार में चमकते सूरज की तरह है, छोटे–छोटे ढीले भी बनाये गये हैं। कुछ पेड़–पौधे भी बने हैं। चित्र के एक छोटे से हिस्से में एक महल का चित्र है।

अकबर के एलबम तिलिस्म के एक दृश्य में धनु राशि के चित्र हैं। जिसमें तीन व्यक्ति चित्रित हैं। एक व्यक्ति सम्भवतः वह कोई शासक है। धनुष पकड़े हुए है। उसने मंगोली टोपी पहनी है। उसका चेहरा एक चश्म अंकित है। उसके पीछे एक व्यक्ति बैठा हुआ है और जो थोड़ा सा उठकर एक धनुष जो व्यक्ति गिरने की अवस्था में है। उसने अपने दोनों हाथों से धनुष को दोनों छोरो से पकड़ रखा है।

अकबर के एलबम तिलिस्म के एक दृश्य जिसमें मिथुन राशि के चित्र बने हैं, में एक आकृति जिसके दो चेहरे हैं, एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठा है। चित्र को गहनता से देखने से एक चेहरा स्त्री का तथा दूसरा पुरूष का प्रतीत होता है। उसके दो हाथ हैं। जिसमें से एक हाथ को उसने ऊपर उठा रखा है तथा दूसरा हाथ उसकी जांघा पर है। चित्र में पीपल का वृक्ष है। उसकी एक–एक पत्तियों को पृथक–पृथक देखा जा सकता है। चित्रों के एक हिस्से में दो हिरण बने हुए हैं तथा एक हिस्से में एक मोर का चित्र है। चित्र में एक महल का दृश्य है। जिसके चारों तरफ ऊँची चाहरदीवारी बनी है।

गुलमान द्वारा चित्रित एक चित्र में मछली मारते गुगलकालीन मछुआरों का दृश्य है। इसमें नदी में तीन नाव दिखाया गया है। कुछ लोग जाल द्वारा मछली पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं और कुछ लोग भाले द्वारा मछली पकड़ रहे हैं। चित्र में जो नाव दिखायी गयी है। उसके शीर्ष में कुद आकृतियाँ हैं, जो क्रमशः मोर, हिरण, घोड़े आदि की है जमीन पर टीलों के पीछे दो व्यक्ति खड़े हैं। दोनों ने हाथों में तलवार थाम रखे हैं। जल का अंकन बहुत सुन्दर ढंग से हुआ है।

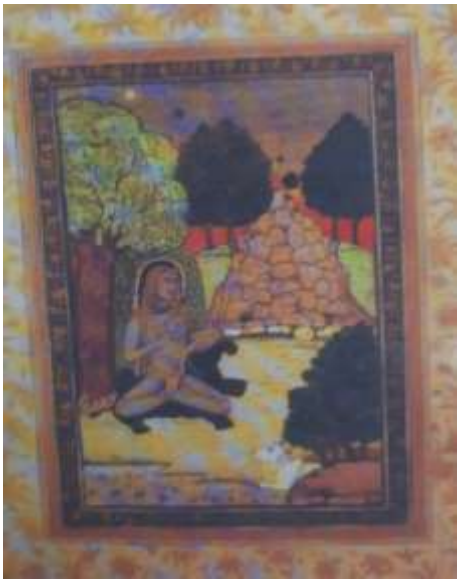

रागमाला के चित्र जिसमें शिवजी का अंकन हुआ है। शिवजी को एक पेड़ के नीचे बाघ के चमड़े के ऊपर बैठा दर्शाया गया है। उनके एक हाथ में त्रिशूल है तथा दूसरे हाथ में एक कटोरी है। उनके गले में मुण्डमाला है। उनके सम्मुख एक गाय (नन्दी) का चित्र है। उसके समीप से नदी बह रही है। नदी में छोटे–छोटे पुष्पों का चित्रांकन हुआ है। इस चित्र को राग भैरव चित्र कहते हैं।

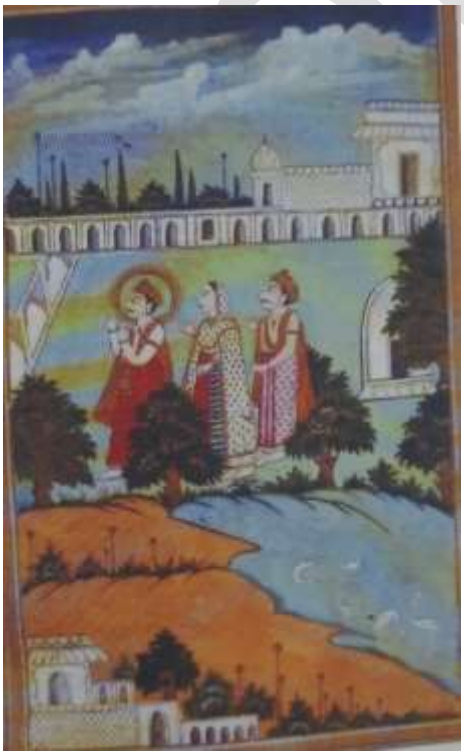

बाल्मीकि रामायण फारसी अनुवादक समर चन्द्र के एक चित्र में राम, लक्ष्मण तथा सीता का अयोध्या छोड़ वनबास जाते हुए समय का चित्र है। सीता जी को बीच में दिखाया गया है। उनका वस्त्र बिन्यास मुगलकालीन समय के अनुसार दिखाया गया है। उनके समीप एक तालाब का दृश्य है। जिसमें मछली उछलती हुई चित्रित की गयी हैं। दो बगुले का चित्र भी बना है। परिप्रेक्ष्य के नियमों का पूर्णरूप से पालन हुआ है। इमारतों को भी मुगलीय ढंग से बनाया गया है।

राशीद–उद्दीन–फजुल्लाह द्वारा लिखित जमी–उद–त्वरिख का एक पृष्ठ जिस पर बने चित्र में चंगेज खान के पुत्र तुलाई खान के दरबार का वर्णन है।

तुलाइ खान एक ऊँचे से आसन पर बैठे हैं, उनके आस–पास बहुत से लोग हैं, सभी लोगों के सिर पर एक टोपी लगी है, जिस पर रंग–बिरंगे पंख लगे हुए हैं, उन लोगों की वेशभूषा भी बहुत सुन्दर एवं अलंकरण युक्त है तुलाई खान अपने दरबारियों को कुछ समझा रहे हैं। उन लोगों के समीप पात्रों में फल व खाद्य सामग्रियाँ रखी हुई है, पुष्ठ के मध्य में अंकित एक चित्र में तीन व्यक्ति चित्र हैं, एक व्यक्ति के हाथ में बाज बैठा हुआ है, वह पीछे मुड़कर देख रहा है। पीछे एक व्यक्ति खड़ा है। वह अपना हाथ ऊपर किये हुए हैं। अन्य तीसरा व्यक्ति कुछ रहस्यमयी तरीके से ऊपर की ओर देख रहे हैं।

रशीद–उद्दीन–त्वारिख द्वारा रचित उमी–उद्–त्वारिख का एक पाण्डुलिपि चित्र में जिसमें एक राजकीय तम्बू के नीचे मंगोलियन सम्राट अपनी रानी के साथ बैठी है, उनके दोनों तरफ दो सेवक खड़े हैं, उनके सामने बहुत से दरबारी और सेवक–सेविकाएं खड़ी हैं निकट में रखे पात्रों में मदिरा, खाद्य सामग्री आदि रखे हैं।

चित्र में बने आकृतियों के वस्त्रों पर ईरानी अलंकरण का प्रयोग देखा जा सकता है। तम्बू के चारों तरफ घेरा लगा हुआ है।

मजालीसुल उशाक नामक पुस्तक का एक पाण्डुलिपि चित्र जिसमें खानगाह का चित्रण हुआ है। दो मुख्य व्यक्ति एक ऊँचे से स्थान पर बैठे हैं। उनके समीप दोनों ओर दो व्यक्ति खड़े हैं। वह से कुछ नीचे बहुत से लोग कब्बाली पर नृत्य कर रहे हैं। कुछ लोग वाद्ययन्त्र बजा रहे हैं। कुछ फर्श पर बैठे ही नृत्य का अभिनय कर रहे हैं। सभी लोग ने एक प्रकार के वस्त्र पहने हैं। देखने में से सूफी संतों जैसे लग रहे हैं।

अकर के एलबम तिलिस्म का चित्र इसमें एक ही पुष्ठ पर अलग–अलग 6 चित्र बने हैं। प्रथम चित्र में एक भिखारी को हाथ में कटोरा लिये चलते हुए दिखाया गया है। भिखारी ऊपर की ओर असहाय भाव से देख रहा है। दूसरे चित्र में एक व्यक्ति बगीचे में बैठा है। उसके हाथ में एक कौआ है उसके सम्मुख एक पात्र में फल तथा एक अन्य पात्र में मदिरा रखा है। बगीचे का चित्रण मनभावक है। जहाँ पर केले, मजनू, आम आदि वृक्ष है। तीसरे चित्र में एक कंकाल का चित्र है, जो चल रहा है। चौथे चित्र में एक व्यक्ति खंजर चलाने का अभ्यास कर रहा है। पाँचवे चित्र में एक व्यक्ति को भागते हुए दिखाया गया है। उसके साथ भागते हुए दो कुत्ते भी चित्रित हैं। छठे और अन्तिम चित्र में एक व्यक्ति तलवार चलाने का अभ्यास कर रहा है।

एक व्यक्ति चित्र में हुमायूँ एक सिंहासन पर बैठे हुए हैं। उनके सिर पर एक सफेद पगडी है। जिनमें बहुमूल्य मणि रत्न जड़ित है। एक पंख भी लगा है। उन्होंने काले रंग का कुर्ता पजामा पहन रखा है। जिसके ऊपर से एक बाहों तक कटी कमीज पहने है। वस्त्रों पर कोई अलंकरण इत्यादि नहीं है। केवल सामान्य ढंग के हैं। वे एक दर्पण पकड़े हुए है। जिनमें उनकी प्रति छवि दिख रही है।

उपरोक्त अध्ययन से यह पता चलता है कि रामपुर रजा लाइब्रेरी में संग्रहित पाण्डुलिपियों में जैन तथा बौद्ध धर्म से संबंधित आकृतियों रामायण महाभारत भगवत पुराण गीत गोविंद ऐतिहासिक तथा पौराणिक घटनाओं तथा राग माला का चित्रण किया गया है किरानी कला के फारसी काव्य की प्रेरणा प्रधान रूप से रही है जिसमें ऐतिहासिक स्थान को धार्मिक घटनाओं शायरी आज की प्रमुखता है।

सन्दर्भ सूची

1. जमीं–उद–त्वारिख का पाण्डुलिपि पृष्ठ–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्धख चित्र सं0–53
2. जमीं–उद–त्वारिख का पाण्डुलिपि पृष्ठ–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्धख चित्र सं0–54
3. शाहनामा का एक पृष्ठ–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–61
4. अकबर के निजी संग्रह दीवान–ए–हाफिज का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–81
5. अकबर के निजी संग्रह दीवान–ए–हाफिज का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं086
6. घुड़सवार के महिला के स्नानस्थल के पास से गुजरने का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–163
7. महिला सह–साथियों के साथ झुलाकिया–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–161
8. लखनऊ की ऐतिहासिक नदी व भवन का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–160
9. जहाँगीर के होली खेने का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–141
10. अकबर की अलवम का (तिलिस्म) चित्र–पृष्ठ–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–108
11. अकबर की एलबम का चित्र–पृष्ठ–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–100
12. वुर्ज–ए–सुम्वला कन्या राशि का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–95
13. अकबर के निजी संग्रह दीवान–ए–हाफिज का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–91
14. वुर्ज–अल–असद सिंह राशि का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–92
15. वुर्ज–ए–सरतल कर्क राशि का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–93
16. वुर्ज–ए–दालू कुम्भ राशि का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–94
17. वुर्ज–ए–क्वास धनु राशि का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–96
18. वुर्ज–ए–जौआ मिथुन राशि का दृश्य–देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–97
19. दीवान–ए–उरफी सिराजी का पृष्ठ –देखिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, चित्र सं0–119

IJOMRC